अविवाहित योग

निशान्त ताम्रकार

इस लेख में हम जानेंगे कि व्यक्ति अविवाहित क्यों रह जाता है?

इसके पूर्व यह जान लें कि यह योग कुछ मिनट अनुसार ही बनेंगे क्योंकि यदि हम अपने आस–पास देखें तो पाएंगे कि 1000 लोगों में कोई एक अविवाहित होता है। इसलिए इसके सूक्ष्म योग देखना होगा।

सबसे पहले आपकी डेट ऑफ बर्थ में 8 अंक की अधिकता विवाह विलम्ब का कारण बनती है। शनि 8 अंक का स्वामी है। वहीं यदि डेट ऑफ बर्थ में 1, 8, 9 का सहयोग हो तब यह मूलांक भी बाधक है।

मंगल और शुक्र नैसर्गिक रूप से पति पत्नी कारक हैं और गुरु धर्म, मुखिया, माता–पिता (प्रथम गुरु) गुरु है। यहां यह ध्यान रखें कि जब तक मंगल शुक्र को गुरु कृपा न मिले विवाह सम्भव नहीं। अतः मंगल शुक्र को गुरु की दृष्टि युति भी प्राप्त हुई हो तभी विवाह होगा।

यदि सप्तमेश शनि से प्रभावित हो और 3रे स्थान में हो तब व्यक्ति का विवाह लेट होता है।

शुक्र मंगल जो नैसर्गिक पति पत्नी कारक है इनका शुभ सम्बन्ध, डिग्री में मजबूत और अशुभ सम्बन्ध में न हो तब यदि गुरु की दृष्टि न हो ऐसे में विवाह विलम्ब से या अविवाहित योग बनता है।

शुक्र सूर्य के मध्य 44 डिग्री का अंतर अविवाहित होने में मददगार है। पाठक गणों के मन मे यह प्रश्न होगा कि आखिर सूर्य के नजदीक गया ग्रह जब अपना बल खो देता है तब उसी से दूर गया शुक्र विवाह में रोड़ा या अयोग्य क्यों? इसे समझें। शुक्र वीर्य, उत्तेजना, सौंदर्य का कारक है, सूर्य ऊर्जा स्रोत। ऐसे में शुक्र का दूर जाना वैसे ही है जैसे निस्तेज वीर्य जो सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकता। इसलिये ऋषि मुनियों ने सूर्य से दूर शुक्र को विवाह विलम्ब योग में प्रमुख माना है।

लग्न की डिग्री और ग्रहों की डिग्री के मध्य बड़ा अंतर भी योग के बाद भी विवाह नहीं होने देता।

शुक्र का कर्क, सिंह राशि में होना, शनि दृष्ट होना, शुभ प्रभावहीन होना विवाह विलम्ब या अविवाहित योग बनाता है।

शुक्र कर्क में कमजोर होता है। ऐसे में कई मामलों में जातक के निजी जीवन की विसंगतियों के कारण जातक विवाह से डरता है।

वहीं सिंह में शुक्र और भी पीड़ित होता है। यहाँ वैवाहिक सुख न के बराबर मिलता है। लेकिन गुरु के सम्बन्ध को देखे बिना शुक्र की इस स्थिति पर कुछ भी न कहें।

आइये अब कुछ विशिष्ट योग जो विशेष तौर पर बाधक हैं, को हम समझने का प्रयास करते हैं।

जन्म कुंडली मे सूर्य, शनि, चन्द्र का सम्बन्ध हो। यह योग डिग्री अनुसार मजबूत हो। शनि चन्द्र युति, दृष्टि, सम्बन्ध बन रहा हो या सूर्य शनि दृष्टि युति संबंध हो साथ ही यही स्थिति नवांश में भी है तो जातक अविवाहित निश्चित होगा। लेकिन यहां प्लूटो का सम्बन्ध लग्न, सप्तम, लग्नेश, सप्तमेश, मंगल शुक्र से हो तब ही अविवाहित योग फलित होगा।

कोई भी योग अकेले बली नहीं होता जब तक अन्य दुर्गुण मजबूत न हों। लेकिन कई बार इन योगों के बाद एक बात और है जो अविवाहित होने पर अपनी मुहर लगाती है।

महादशा–अन्तर्दशा के बिना योग फल सम्भव ही नहीं।

विवाह की संभावित उम्र 18 से 40 लड़की के लिये और लड़कों के लिये 25 से 45 के मध्य आ रही दशा का भी सूक्ष्म विश्लेषण आवश्यक है।

महादशा स्वामी, उसका नक्षत्र स्वामी, उसकी नवांश में स्थिति का निरीक्षण जरूर कर लें।

अब भाव सम्बन्ध देखें 4, 6, 8, 12, 10, 2

4था भाव और दसवां भाव ये काल पुरुष चक्र में माता–पिता, सुख, कर्म इत्यादि के कारक हैं। लेकिन क्योंकि हम विवाह ले रहें हैं इसलिये ये भाव स्थिर भाव हैं इनका ध्यान रखें।

4था भाव 7वें से 10वां है और 7 वें से 10वां 4था। ऐसे में ये भाव विवाह की गति स्थिर कर देंगे।

6ठा भाव 7 वें का 12 वां है और 12 वां भाव 7 वें का 6ठा। यह वैसे ही नेगेटिव है।

अब 8 वां और दूसरा भाव ये दोनों भाव लग्न सप्तम से 8वें नम्बर पर आते हैं।

6ठे भाव के त्रिकोण में आकर ये 2, 6, 10 को बली करेंगे जो विवाह भाव से नेगेटिव भाव है।

2रा भाव कुटुंब का है किंतु विवाह होने में इसका सम्बन्ध शुभ होगा तभी विवाह कराएगा अन्यथा बाधक होने की बड़ी भूमिका निभाएगा।

अब हम दशा को समझें जहाँ भाव और ग्रहों का ही सम्बन्ध है।

महादशा स्वामी, नक्षत्र स्वामी मिलकर 6 10 8 12 से जुड़ें तब विवाह मुश्किल से होगा।

यदि दशा स्वामी और नक्षत्र सम्बन्ध 4 6 10 2 से जुड़े तब विवाह नहीं होगा।

दशानाथ का सम्बन्ध 2, 4, 6, 12 भाव से बने तब ऊपरलिखित योगों का मिलान कर आपको पता चल जाएगा किसका विवाह होगा किसका नहीं?

2रा भाव कुटुंब का है लेकिन इसे विरोधी भाव स्तर पर लिया गया है। इसके पीछे कुछ विशेष रहस्य है।

इस तरह अविवाहित योग को पकड़ना 60 परसेंट तक गणित के पक्के और विद्वान ज्योतिषी के लिये बहुत कठिन कार्य नहीं।

अब ऊपर लिखित उदाहरणों को आप आगे कुछ कुंडलियों में व्याख्या सहित समझें।

उदाहरण कुंडली 1 का जातक मीन लग्न और वृश्चिक राशि का है। इनकी महादशा बुध 1995 से 2012 और उसके बाद केतु की 2012 से 2019।

अब सूर्य शुक्र के बीच दूरी। शुक्र 03 अंश, सूर्य 19 अंश। ग्रह 2 भाव में है एक भाव 30 अंश तो दोनों मिलाकर 60 अंश हुए। 60 में सूर्य का 19 और शुक्र का 03 अंश घटाएं तो हमें 48 प्राप्त हुआ। यह पहली दूरी स्पष्ट।

सूर्य चन्द्र पर शनि का प्रभाव–सूर्य शनि की युति है। गुरु की दृष्टि मंगल शुक्र किसी पर नहीं। तुला राशि पर प्लूटो का प्रभाव है।

अब महादशा : पहले बुध की। बुध 4, 7 भाव का मालिक होकर 8 वें भाव में है। बुध गुरु के नक्षत्र में गुरु 1, 10 का स्वामी होकर 9वें भाव में है। बुध के नक्षत्र में केतु है। केतु मंगल के सम्बन्ध में 6 और 9 भाव से प्रभावी। अतः यहाँ पाठक ध्यान दें कि हमें बुध

06–11–1983 समय 15:27 स्थान जालंधर पंजाब. पुरुष जातक

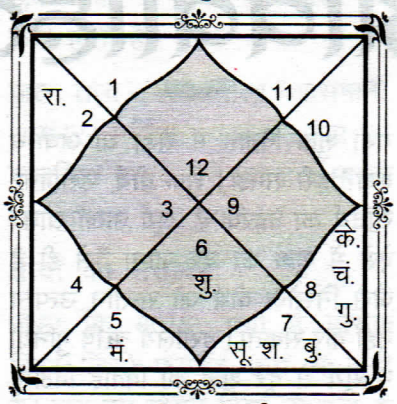

नवांश कुंडली

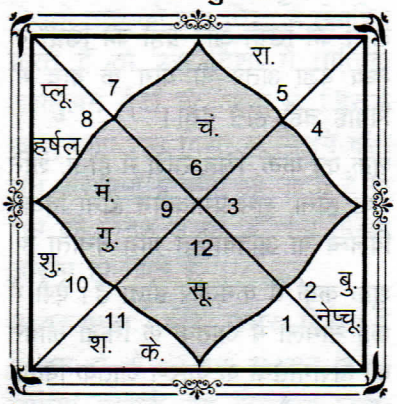

से 4, 8, 10, 6, 1 प्राप्त हुआ अतः महादशा सूत्रानुसार यह दशा विवाह में सहयोगी नहीं रही।

अब केतु की दशा – केतु बुध के नक्षत्र में मंगल से दृष्ट। केतु 9वें भाव में मंगल के साथ 6 के प्रभाव में है। यहां एक बात और उल्लेखनीय है कि बुध केतु समान अंश में है। यह भी सप्तमेश को पीड़ित कर गया।

उदाहरण कुंडली 2 का जातक एक बड़े सरकारी प्रशासनिक पद में है फिर भी अभी तक अविवाहित है। आइये जानें क्यों?

डेट से देखें. 08 |06 |1985 मूलांक 8 भाग्यांक 1। 8 दो बार आ गया। किंतु यह पुष्टि नहीं करता केवल सहयोगी है। अब जातक वृश्चिक लग्न कुम्भ राशि का है। जातक को गुरु की दशा 2005 से लगी जो 2021 तक है।

पुरुष जातक 08–06–1985, 18:45, हरदा, मध्यप्रदेश।

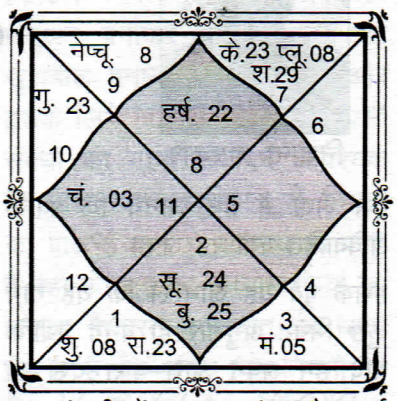

इस कुंडली में शुक्र 8 अंश और सूर्य 24 अंश पर आगे के भाव में है। अब स्पष्ट है कि शुक्र के बाद 22 अंश का भाव रिक्त है और सूर्य आगे के भाव में 24 अंश पर है। यहां 22 और 24 अंश मिलकर 46 अंश की दूरी स्पष्ट करते हैं।

चन्द्र 4थे भाव में, सूर्य 7वें भाव में, शनि वक्री है और 12वें घर में।

यहां शनि वक्री होकर चन्द्र सूर्य दोनों से सम्बन्ध बना रहा है।

प्लूटो तुला में शुक्र की राशि में है।

अब हम दशावलोकन करें।

जातक को गुरु की दशा मिली।

गुरु 5वें और 2रे का स्वामी होकर वक्री हो 3 और 2 भाव को प्रभावित कर रहा है।

गुरु चन्द्र के नक्षत्र में चन्द्र 9वें भाव का स्वामी होकर 4थे भाव में बैठा है।

गुरु के नक्षत्र में शनि है जो 12वें और 11वें के सम्मिलित सम्बन्ध में है। शनि 3 और 4 भाव के स्वामी हैं।

यहां भाव से हमें 5, 2, 12, 4 प्राप्त हुआ जो सूत्र अनुसार 2, 4, 12 से जुड़ा। ये विवाह में सहायक नहीं हैं।

पता : जयप्रकाश वार्ड,
छोटी खेरमाई, पनागर, जबलपुर
मध्यप्रदेश
मो. 9165625967